प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

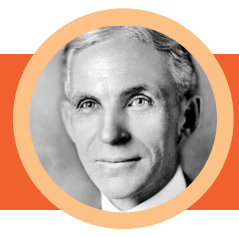

अगर कार्य की सफलता जरूरी है, तो किसी भी व्यवस्था को सुधारने के लिए तैयार रहिए। - हेनरी फोर्ड

कोविड-19 का संक्रमण फैलने के डेढ़ साल बाद हुई रूसी राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा दोनों देशों के रिश्तों की निरंतरता को ही रेखांकित करती है। एके 203 असॉल्ट राइफल को लेकर हुए समझौते और दोनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्रियों की 2 + 2 बैठक की शुरुआत से यह रिश्ता और मजबूत ही होगा।

भरोसेमंद दोस्ती

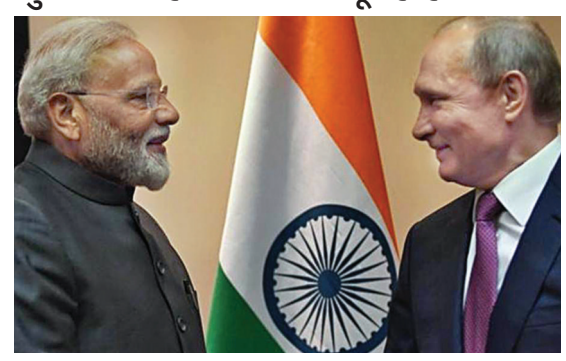

भारत-रूस 21वें वार्षिक शिखर सम्मेलन के सिलसिले में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भले ही कुछ घंटे के लिए भारत आए, मगर कोविड-19 की महामारी फैलने के डेढ़ साल बाद हुई उनकी यात्रा दोनों देशों के रिश्तों की प्रगाढ़ता और निरंतरता को ही रेखांकित करती है। पुतिन की भारत यात्रा ऐसे समय हुई है, जब हिंद-प्रशांत क्षेत्र में तनाव फैला हुआ है और अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी के बाद से संदेह और आशंका का माहौल बना हुआ है। यही नहीं, चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों को निरंतर अंजाम भी दे रहा है। इन सबके बावजूद हकीकत यही है कि रूस और भारत एक दूसरे के बेहद भरोसेमंद साझीदार हैं, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित करते हुए कहा कि दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी के दो दशक पूरे हो चुके हैं। वहीं पुतिन ने इसकी तस्दीक करते हुए कहा कि आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी और संगठित अपराध के खिलाफ दोनों देशों का रुख एक जैसा है और दोनों वैश्विक एजेंडे को लेकर एक दूसरे को सहयोग करते रहेंगे। पाकिस्तान द्वारा सीमा पार से जारी आतंकवाद के मद्देनजर पुतिन की इस स्वीकारोक्ति का महत्व समझा जा सकता है। दोनों नेताओं ने अफगानिस्तान की अस्थिरता को लेकर भी चिंता जताई है। इन सबके बीच, दोनों देशों के रिश्ते में सोमवार को एक नया आयाम तब जुड़ गया, जब दोनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्रियों के बीच 2 + 2 वार्ता भी शुरू हो गई। इससे पहले भारत का ऐसा रिश्ता अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ ही रहा है। वास्तविकता यह है कि अंतरिक्ष विज्ञान के साथ ही रक्षा मामलों में भारत और रूस के रिश्ते बेहद भरोसेमंद हैं, जिसका प्रमाण सोमवार को अत्याधुनिक असॉल्ट राइफल एके-203 की खरीद के लिए हुए समझौते से भी मिलता है। समझौते के तहत अमेठी की आयुध फैक्टरी में इन राइफलों के निर्माण में रूस मदद करेगा। भारत ने पहले ही रूस से लंबी दूरी के जमीन से हवा में मार करने वाले एयर मिसाइल डिफेंस सिस्टम एस-400 की खरीद के लिए करार किया हुआ है, जिसकी आपूर्ति शुरू हो चुकी है। इस सौदे ने अमेरिका को असहज किया है, लेकिन रूस और भारत के द्विपक्षीय रिश्ते समय की कसौटी पर परखे हुए हैं, जिसे पुतिन की यात्रा से और मजबूती ही मिली है।

प्रताप नारायण मिश्र
(1856-1894)

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

सब स्वार्थ तत्पर हैं। हां, अपने कुटुंब, अपनी जाति, अपने देश की जूठन-काठन थोड़ी-सी इतरों को भी देना चाहिए, जिसमें यश हो।

अपने देश के लिए स्वार्थ में क्या बुराई

स्वार्थ को हमारे पुराने ऋषियों ने बुरा माना है, पर हमारी समझ में इस विषय में उनका कहना अप्रमाण है, क्योंकि जो जिस बात को जानता ही नहीं, उसके वचनों का क्या प्रमाण? वन में रहे, कंद-मूल खाए, भोजपत्र पहिने, पोथियां उलटते व राम-राम, श्याम-श्याम करते जन्म बिताया। न कभी कोई धंधा किया, न किसी की नौकरी की, न किसी विदेश से काम पड़ा, फिर उन्हें स्वार्थ का मजा क्या मालूम?

आजकल अंगरेजी राज्य में तो ऐसा कोई काम ही नहीं है, जो स्वार्थ से खाली हो, नहीं तो दो-चार बातें बतलाइए जो केवल प्रजा के हितार्थ की गई हों। फिर हम क्या बुरा कहते हैं कि स्वार्थ में कोई बुराई नहीं, सभी सदा से करते आए हैं। गोस्वामी जी ने खोल के कह ही दिया है-*आए देव सदा स्वारथी*। जब देवताओं की यह दशा है, तब मनुष्य स्वार्थपरता से कैसे पृथक रह सकता है। सच पूछो तो जो लोग स्वार्थ की निंदा करते हैं, वे स्वार्थ साधन के लिए ही दूसरों को भकुआ बनाते हैं। दूसरों को दया, धर्म, न्याय, निःस्वार्थ इत्यादि के भ्रमजाल में न फंसावें, तो अवसर पर अपना दही कैसे जमावें। इसमें हमें निश्चय हो गया है कि चतुर, बुद्धिमान, नीतिज्ञ पुरुषों के लिए स्वार्थ कभी किसी दशा में अत्याज्य नहीं है। जो लोग दूसरों को पर-स्वारथ सिखाते हैं, वे तो खैर अपना काम चलाने के लिए लोगों को फुसलाते हैं, पर जो उनकी बातों में फंसकर पर-स्वार्थी बनने का उद्योग करते हैं, वे प्रकृति के नियम को तोड़ते हैं, अर्थात अपने सुख, संपत्ति, सौभाग्य से मुंह मोड़ते हैं। नहीं तो बड़ों में निःस्वार्थी है कौन? क्या देवता लोग राक्षसों का भला चाहते हैं? क्या महात्मा लोग नास्तिकों की खैर मनाते हैं?

जो लोग स्वार्थ की निंदा करते हैं, वे स्वार्थ साधन के लिए ही दूसरों को भकुआ बनाते हैं। दूसरों को दया, धर्म, न्याय, निःस्वार्थ इत्यादि के भ्रमजाल में न फंसावें, तो अवसर पर अपना दही कैसे जमावें।

सब स्वार्थ तत्पर हैं। हां, अपने-अपने कुटुंब, अपनी जाति अपने देश की जूठन-काठन थोड़ी-सी इतरों को भी देना चाहिए, जिसमें यश हो।

जो लोग बड़े त्यागी, बैरागी, भक्त-विभक्त होते हैं, वे तो स्वार्थ को छोड़ते ही नहीं। वे दुनिया के सुखों को छोड़के महासुख स्वरूप सच्चिदानंद को चाहते हैं। अतः बड़े भारी स्वार्थ साधक हैं। स्वार्थ न हो, तो संसार की स्थिति ही न हो। बड़े-बड़े परिश्रम करके जिन उत्तम बातों को लोग संचित करें, वह दूसरों को सौंप दें, दूसरा तीसरे को सौंप दे, इस तरह होते-होते थोड़े दिन में किसी के पास कुछ रह न जाए। इसी से कहते हैं-*स्वार्थ समुद्धरेत्प्राज्ञः*। हां, बहुत ही न्यून स्वार्थ बुरा है, *आप जियंते जग जिए करमा मरे न हानि* का आचरण निंदित है। इससे अधिक से अधिक स्वार्थ बढ़ाते रहना चाहिए। अपने ही लिए स्वार्थी न होके अपने संबंधी मात्र का स्वार्थ सिद्ध करना चाहिए। दुनिया भर को कैसी ही हानि हो, अपने देश के स्वार्थ के लिए कैसा ही कर्तव्याकर्तव्य कर उठाना चाहिए, क्योंकि इसके बिना निर्वाह नहीं है। परस्वार्थी करने पर चाहे बैकुंठ जाते हों, पर दुनिया में सदा दुखी रहते हैं।

महात्मा कह गए हैं, *समरथ को नहिं दोष गुसांई*। स्वार्थ साधन में दक्ष होने से बेईमान मनुष्य चतुर कहलाता है, हत्यारा वीर कहलाता है, परनिंदक स्पष्टवक्ता कहलाता है। जिस पर महात्मा की दया होती है, वही स्वार्थ साधन तत्पर होता है। इसलिए हे भाइयों, मेरी बात को वेद की ऋचा समझ के दिन-रात, सोते-जागते, स्वार्थ-स्वार्थ रटा करो। इसी में भला होगा, नहीं तो सदा यों ही अवनति होती रहेगी, जैसी महाभारत के समय से होती आई है।

लैंगिक दबाव से जूझती महिला उद्यमिता

महिला उद्यमिता को मूल्यवान नहीं माना जाता, क्योंकि महिलाओं को उद्यमी के रूप में मान्यता नहीं मिलती। घरेलू कामकाज के प्रति उनकी प्राथमिक निष्ठा की वजह से फंडर्स उन्हें गृहिणियों के रूप में ही देखते हैं।

उद्यमी और राज्य के अधिकारी बेंगलुरु को एक ऐसे शहर में बदल रहे हैं, जहां दुनिया के 'बैकएंड' प्रौद्योगिकी कार्य को एक नए स्टार्ट-अप हब में भेजा जाता है, जो उद्यमिता और नवाचार के लिए जाना जाता है। वर्ष 2012 से मैं कई स्थलों और कार्यों का पता लगा रही हूं, जिनके माध्यम से इस 'स्टार्ट-अप सिटी' का निर्माण किया गया है। नागरिकों को उद्यमी बनाने वाले एक प्रमुख स्थल का विशेष ध्यान महिलाओं को उद्यमी बनाने पर है। महिला उद्यमियों के लिए नेटवर्किंग कार्यक्रम, गूगल द्वारा आयोजित प्रौद्योगिकी पर विशेष सत्र, भारतीय प्रबंधन संस्थान (बेंगलुरु) में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम और परामर्श के लिए अनौपचारिक समूह हैं। फिर इतनी सारी महिला उद्यमी, जिनसे मैं मिली, वे पर्याप्त धन प्राप्त करने या उद्यमियों के रूप में पहचान बनाने में विफल क्यों रहीं? नई सहस्राब्दी में 'विकास के लैंगिक क्रम' के बारे में लिखते हुए, यूसीएलए (यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया, लॉस एंजिल्स) की प्रोफेसर अनन्या रॉय ने रेखांकित किया कि नवउदारवादी विचारधाराओं और मितव्ययिता की राजनीति ने ऐसे उदारवादी महिला के लिए जगह बनाई है, जो गरीबी पर गौर करती है और उसे खत्म करने के लिए काम करना चाहती है। यह महिला उद्यमी और प्रभावी है। वह अपने समुदाय की बेहतरी के लिए माइक्रोफाइनेंस ऋण ले सकती है। महिलाओं को उद्यमी बनाने, मूल्य सृजित करने और गरीबी उन्मूलन के जरिये यह नीतियों को महिलाओं के अनुकूल बनाती है। रॉय लिखती हैं कि वैश्विक विकास में यह मोड़ 'उन तरीकों को चिह्नित करता है, जिनमें महिला-उन्मुख नीतियों के माध्यम से विकास होता है, जो सामाजिक उत्पादन की पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को बनाए रखने का काम करता है।'

हेमांगिनी गुप्ता

फील्डवर्क के दौरान मैंने अनुभव किया कि कैसे विकास का यह लैंगिक क्रम स्टार्ट-अप पूंजीवाद की प्रतिस्पर्धी उद्यमशीलता की दुनिया को आकार देता है। महिलाओं को एक सामाजिक व्यवस्था के भीतर ही उद्यमी बनना है, जो अब भी उनसे अपेक्षा करता है कि वे घरेलू काम करें, जाति एवं वर्ग को मानें तथा परिजनों को स्कूल एवं काम पर जाने के लिए तैयार करें।

एक बड़े सामाजिक ढांचे में बदलाव किए बिना महिलाओं को सशक्त बनाने पर जोर कम से कम दो तरह से सामने आता है। पहले में, महिलाओं को पुरुष प्रधान स्टार्ट-अप की दुनिया में फंड की खातिर प्रतिस्पर्धा के लिए मजबूर किया गया। जैसे बेंगलुरु में एक स्टार्ट-अप फेस्टिवल में मैंने एक 'पीचिंग सेशन' में हिस्सा लिया, जिसमें उद्यमी फंड प्रदान करने वाले पैनल के सामने अपनी कंपनी और अपने आइडिया के बारे में संक्षेप में बताते थे। महिलाएं अपनी कंपनियों के बारे में बताने के लिए खड़ी हुईं- बच्चों के लिए गणित का खेल, कार्यबल में फिर से शामिल प्रवेश करने वालों के लिए मानव संसाधन परामर्श पहल, पार्टी गेम्स के लिए आइडिया। उन्हें फंडिंग पैनल से तीखी प्रतिक्रिया मिली। वित्त पोषक उन परियोजनाओं की तलाश में थे, जो बड़े पैमाने पर सफल हो सकें, और मौजूदा बाजार की जरूरतों को पूरा करने के बजाय अपने स्वयं के बाजार बनाने के लिए पर्याप्त प्रचार कर सकें। वहां महिलाओं ने व्यवसायी गुर सीखे और इस बात को समझा कि कैसे वे अपने उद्यमों को नया आकार दे सकती हैं। लेकिन समस्या सिर्फ आइडिया को लेकर नहीं थी, बल्कि समस्या यह है कि स्टार्ट-अप उद्यमिता एक पुरुष-प्रधान क्षेत्र है। यह नवाचार, नेटवर्किंग और अवकाश के क्षेत्रों में गतिशीलता की मांग करता है, जो स्टार्ट-अप दुनिया का गठन करते हैं। इस बीच कई महिला उद्यमी शाम की नेटवर्किंग कार्यक्रम से पहले अपने छोटे बच्चों की देखभाल के लिए घर चली गईं।

जब इन परिस्थितियों में महिला उद्यमिता उभरती है, तो वह उन सामाजिक ढांचे को नहीं बदल सकती है, जो महिलाओं के समय और ऊर्जा की मांग करती है। यह उन्हें एक मर्दाना दुनिया में फिट करने का प्रयास करता है, जो अथक घंटों, उद्यमिता स्थलों पर गतिशीलता और व्यवसाय को बढ़ाने के लिए असीमित समय की प्रतिबद्धता की मांग करता है। महिला उद्यमिता को मूल्यवान नहीं माना जाता, क्योंकि महिलाओं को उद्यमी के रूप में मान्यता नहीं मिलती। घरेलू कामकाज के प्रति उनकी प्राथमिक निष्ठा की वजह से फंडर्स उन्हें गृहिणियों के रूप में ही देखते हैं।

दूसरा तरीका, जिसमें महिला उद्यमिता के सामान्य सवाल को चुनौती के रूप में लिया गया, वह है समर्पित प्रशिक्षण और परामर्श। जैसे, प्रतिष्ठित आईआईएम महिला उद्यमियों के लिए लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है। गोल्डमैन सैक्स का एक वैश्विक कार्यक्रम है, जिसे ऑनलाइन पाठ्यक्रम के रूप में चलाया जाता है, ताकि महिलाओं को 'व्यावहारिक उपकरण और ज्ञान से लैस किया जा सके, ताकि वे अपने बढ़ते व्यवसाय की मांगों को सफलतापूर्वक प्रबंधित कर सकें।' यहां उद्यमियों को बार-बार खुद को कुशल बनाने के लचीले विकल्प प्रदान किए जाते हैं: यह नवउदारवादी अर्थव्यवस्थाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसके लिए हमें हमेशा बदलती बाजार स्थितियों के लिए खुद को तैयार करने की आवश्यकता होती है।

यदि स्टार्ट-अप पूंजीवाद की प्रतिस्पर्धी पुरुष-प्रधान दुनिया महिलाओं को उद्यमियों के रूप में मान्यता नहीं देती है, तो केवल महिला समूहों के लक्षित प्रयास बड़े ढांचे के समान छूट के साथ व्यक्तिगत सशक्तिकरण और कौशल पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसमें महिलाओं को उद्यमियों के रूप में मान्यता प्राप्त करने या वित्त पोषित होने के प्रयासों में सहायता मिलती है।

जब तक घर में महिलाओं के काम को श्रम के रूप में मान्यता और मुआवजा नहीं दिया जाता है, तब तक महिलाओं को एक गुप्त श्रमशक्ति माना जाता है, जिन्हें अर्थव्यवस्था के लिए मूल्य पैदा करने के लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है। महिलाओं को उच्च मूल्यांकन की इस असंभव अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रशिक्षित करने या उन्हें केवल महिला समूहों में अलग-थलग करने के बजाय हमें फिर से मूल्यांकन करने की आवश्यकता है कि हम काम के विभिन्न रूपों को कैसे महत्व देते हैं और बाजार लेन-देन के बाहर लोकाचार को कैसे पूरा किया जा सकता है।

-लेखिका मिड्लबरी कॉलेज में जेंडर, सेक्सुलिटी ऐंड फेमिनिस्ट स्टडीज की विजिटिंग एसिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

डॉ. राघवेंद्र आर.

मंजिलें और भी हैं

मैंने देश की विरासत को संजोने के लिए प्राचीन स्मारकों को बचाने की एक मुहिम शुरू की और विगत चार वर्षों में मैंने अपने कुछ स्वयंसेवकों के साथ मिलकर शहर के 22 तालाबों, झीलों और मंदिरों को पुनर्जीवित करने का काम किया है।

प्राचीन स्मारकों को बचाने की मुहिम

मैं कर्नाटक में मांड्या जिले के श्रीरंगपटना शहर का निवासी हूं और मैसूर स्थित शेशाद्रिपुरम डिग्री कॉलेज में एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर के पद पर कार्यरत हूं। श्रीरंगपटना शहर अपनी सदियों पुरानी विरासत-इमारतों, तालाबों, झीलों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। वर्ष 2016 की एक सुबह मैं रोजाना की तरह सैर पर निकला था, चलते-चलते मैं अपने शहर श्रीरंगपटना की एक ऐसी जगह पहुंच गया, जहां मुझे झाड़ियों के बीच एक प्राचीन मंदिर नजर आया। यह मंदिर काफी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था, जो जंगली घासों के बीच छिपा था। फिर मैंने इसे पुनर्जीवित करने का फैसला किया और अपने कुछ छात्रों को साथ में लेकर इसके लिए एक मिशन की शुरुआत की। अब तक मैंने जितने भी प्राचीन स्थलों को खोजा है, सभी काफी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिले हैं। धीरे-धीरे इस मिशन से 300 से अधिक स्वयंसेवी जुड़ गए। हम सभी ने मिलकर पिछले चार वर्षों में 22 तालाबों, झीलों और मंदिरों को पुनर्जीवित करने का काम किया है और यह अभियान लगातार जारी है। (विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित)

ऐसे की शुरुआत

आज श्रीरंगपटना शहर की प्राचीन इमारतें काफी जर्जर हालत में हैं। इसलिए मैंने अपनी सुबह की सैर में इन्हें खोजना शुरू किया और फिर उन्हें पुनर्जीवित करने के इस मिशन में छात्रों से सहयोग की अपील की। फिर हम सब मिलकर उन्हें पुनर्जीवित करने में जुट गए। हमने संबंधित अधिकारियों, नगर निगम और पुरातत्व विभाग से भी संपर्क किया, जिन्होंने हमारी काफी मदद की।

जीर्णोद्धार का काम

पिछले चार वर्षों में हमने चार तलाबों, दस झीलों और आठ प्राचीन मंदिरों को खोजकर उन्हें पुनर्जीवित करने का काम किया है। मेरे इस प्रयास से 1,500 से अधिक लोगों को इन पुनर्जीवित तालाबों और झीलों से स्वच्छ पानी मिल रहा है। इसके अलावा हमने शहर के दो पार्कों की सफाई कर, वहां पेड़-पौधे लगाकर उसे फिर से हरा-भरा कर दिया है।

इतिहास संजोने के लिए

समाज के प्रति कृतज्ञता जताने का यह मेरा अपना तरीका है। फिलहाल इस मिशन के साथ 300 से ज्यादा स्वयंसेवक जुड़ कर इस दिशा में काम कर रहे हैं। मेरा उद्देश्य खबरों में आना, प्रचार करना या आर्थिक सहायता लेना नहीं है, बल्कि अपने देश की धरोहर और इतिहास को संजोए रखना है, ताकि आने वाली पीढ़ी भी उनके बारे में जान सके।

आंकड़े

एफडीआई में सर्वाधिक हिस्सेदारी

अंतर्राष्ट्रीय ऋण सांख्यिकी, 2022 के आंकड़ों के अनुसार दुनिया भर में सबसे ज्यादा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) चीन में हुआ, जबकि उसके बाद भारत और ब्राजील का स्थान रहा।

चीन 170	मैक्सिको 22.7
भारत 59.5	इंडोनेशिया 19.3
ब्राजील 40.5	रूस 12.6

आंकड़े अरब डॉलर में, वर्ष 2020 के हैं। स्रोत- Int'l Debt Statistics, 2022

तुम सब अच्छे हो, संस्कारी हो। यह अबोध किशोर अपने दुर्व्यसनी पिता और भाइयों द्वारा ठुकराया हुआ है। इसे मैं सुधारने के उद्देश्य से यहां लाया हूं।

घृणा नहीं, प्रेम करो

अंतर्यात्रा
शिवकुमार गोयल

जेन संत बेनजोई ने अपना जीवन बालकों और किशोरों को शिक्षा देने व संस्कारित करने के काम में समर्पित किया था। वह आश्रम में अपने शिष्यों के साथ रहकर उन्हें शिक्षित किया करते थे। वह कहा करते थे, 'सभी से प्रेम करो। असहायों की सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।'

एक दिन आश्रम में रहने वाला एक लड़का चोरी करता हुआ पकड़ा गया। संत बेनजोई ने उसे चोरी की बुराइयों से अवगत कराया और क्षमा कर दिया। उस लड़के ने दोबारा चोरी की। अन्य शिष्य उसे पकड़कर फिर गुरु के पास ले गए। संत ने उसे पुनः क्षमा कर दिया। शिष्यों ने उत्तेजित होकर कहा, 'यह बार-बार चोरी करता रहेगा और आप उसे माफ करते रहेंगे। यदि ऐसा है, तो हम सब आश्रम छोड़कर चले जाएंगे।'

संत ने शिष्यों की बैठक की। वह बोले, 'मैंने माना कि तुम सब अच्छे हो, संस्कारी हो। कभी किसी कुसंग में न रहने के कारण दुष्कर्मों से दूर हो। यह अबोध किशोर अपने दुर्व्यसनी पिता और भाइयों द्वारा ठुकराया हुआ है। इसे मैं सुधारने, संस्कारित करने के उद्देश्य से यहां लाया हूं। इसे सुधरने का मौका कैसे मिलेगा?'

उस किशोर ने संत के वाक्य सुने, तो उसकी आंखें छलछला आईं। उसने सबके सामने कभी चोरी न करने की प्रतिज्ञा की।

(अमर उजाला आर्काइव से)

शिलालेख

गाऊं कैसा गीत की जिससे
तेरा पत्थर मन पिघलाऊं
जाऊं किसके द्वार जहां ये
अपना दुखिया मन बहलाऊं
गली गली डोलूं बौराया,
बौरिन हुई स्वयं की छाया
मिला नहीं कोई भी ऐसा
जिससे अपनी पीर कहूं मैं

- भारत भूषण

औपनिवेशिक सोच से बाहर आएं अमीर देश

ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए विकासशील देशों से प्रौद्योगिकी साझा करने के लिए अमीर देश आगे आएं।

अश्विनी महाजन, सह संयोजक, स्वदेशी जागरण मंच

पर्यावरण

बदलते मौसम से हो रही तबाही अब लगभग पूरी दुनिया में कहीं कम, तो कहीं ज्यादा, आमजन को प्रभावित कर रही है। भारत में भी उत्तराखंड के पहाड़ों पर बादलों के फटने, कहीं कम और कहीं ज्यादा वर्षा होने और सूखा और बाढ़ आने तथा धुएं के कारण अस्त-व्यस्त होता जीवन देश के हर व्यक्ति को प्रभावित कर रहा है। बढ़ते समुद्र के स्तर के कारण छोटे द्वीपों पर जीवन संकट में है और पर्यावरण के कारण भी बड़ी मात्रा में विस्थापन बढ़ रहा है। समय रहते यदि चेते नहीं, तो आने वाले कुछ दशकों में यह पृथ्वी रहने योग्य नहीं रहेगी।

इसी चिंता के मद्देनजर संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में पर्यावरण सम्मेलनों का आयोजन वर्ष 1994 से चल रहा है, जिसे 'युनाइटेड नेशन्स फ्रेमवर्क कन्वेशन ऑन क्लाईमेट चेंज' भी कहा जाता है। हालांकि जापान के क्योटो शहर में 2012 में आयोजित पर्यावरण सम्मेलन में एक संधि हुई, जिसे 'क्योटो प्रोटोकॉल' के नाम से जाना जाता है, जिसके अनुसार विभिन्न देशों ने अपनी ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य निर्धारित किए। 'क्योटो प्रोटोकॉल' एक ऐसा आखिरी समझौता था, जिसमें विकसित देशों ने ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की अपनी जिम्मेवारी स्वीकार की थी और अल्प विकसित एवं विकासशील देशों को कुछ समय के लिए इन गैसों के उत्सर्जन को घटाने की जिम्मेवारी से छूट भी दी थी।

2015 के पेरिस के पर्यावरण सम्मेलन के बाद भारत ने पूर्व के अपने रुख में बदलाव करते हुए स्वयं ही गैसों के उत्सर्जन को कम करने का संकल्प लिया था और स्पष्ट किया था कि भारत न केवल अपनी महत्वाकांक्षा पर खरा उतरेगा, बल्कि उन महत्वाकांक्षाओं को और आगे बढ़ाने का कार्य करेगा। भारत ने यह भी स्पष्ट किया था कि विकसित देश उस पर ग्लोबल वार्मिंग का ठीकरा फोड़ने की कोशिश न करें। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, तो आज दुनिया पिछले 100 वर्षों में जो हुआ, उसका परिणाम भुगत रही है। जहां मौसम परिवर्तन के लिए अमेरिका की जिम्मेवारी 40 प्रतिशत है, यूरोप की 10 प्रतिशत, चीन की 28 प्रतिशत है, वहीं भारत केवल तीन प्रतिशत के लिए ही जिम्मेवार है।

भारत ने तब भी यह कहा था कि चीन समेत अमीर मुल्कों की जिम्मेवारी अधिक है। कोपेनहेगन में गरीब मुल्कों को पर्यावरण संकट से निपटने के लिए 100 अरब डॉलर उपलब्ध कराने का वचन दिया गया था। लेकिन वह राशि कहीं दिखाई नहीं दे रही। पिछले महीने ग्लासगो में संपन्न कॉप-26 के अंतिम दस्तावेज में उस 100 अरब डॉलर की सहायता की बात को तो तूल ही नहीं दिया गया है, बल्कि भारत (और चीन) पर सारा दोष मढ़ने की कोशिश हुई कि वह कोयले के अधिक उपयोग से पर्यावरण बिगाड़ रहा है। जबकि दुनिया के पर्यावरण संकट के लिए अमेरिका, यूरोप और चीन आदि देश मुख्य रूप से जिम्मेवार हैं। भारत का कहना है कि केवल कोयला ही नहीं, बल्कि अन्य जीवाश्म ईंधन, जैसे पेट्रोलियम और गैस भी उसके लिए उतने ही जिम्मेवार है। कॉप-26 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पांच बिंदुओं में पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को व्यक्त किया, जिसे पंचामृत नाम दिया गया। उसमें 2030 तक गैर जीवाष्म ऊर्जा क्षमता को 500 गीगावाट तक बढ़ाना, अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की 50 प्रतिशत की आपूर्ति नवीनीकरण स्त्रोतों से पूर्ण करना, कार्बन उत्सर्जन को एक अरब टन तक घटाना, कार्बन सघनता को 45 प्रतिशत तक घटाना और 2070 तक देश को 'कार्बन न्यूट्रल' बनाना शामिल है।

भारत जैसे विकासशील और अल्पविकसित देशों को ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए जो प्रयास करने पड़ेंगे, उसके लिए प्रौद्योगिकी की जरूरत होगी। यह प्रौद्योगिकी विकसित देशों के पास ही उपलब्ध है, जिसे साझा करने के लिए वे भारी कीमत चाहते हैं। यदि धरती को जीवन योग्य रखना है, तो विकसित देशों को अपने संसाधनों और प्रौद्योगिकी को उपलब्ध कराना होगा। अमीर मुल्कों को इस औपनिवेशिक सोच से बाहर आना होगा कि वे कुछ भी कर सकते हैं। नहीं भूलना चाहिए कि ग्लोबल वार्मिंग से ये अमीर मुल्क भी अछूते नहीं रहेंगे।